2 सितम्बर, 2018 को श्रीमती सुप्रिया मिलिंद केलोवकर द्वारा रचित पुस्तक ''माझी कविता (माई पोएम्स फॉर माई चिल्ड्रेन)'' के विमोचन समारोह के अवसर पर माननीय अध्यक्ष का भाषण।

1. आज यहां आपके बीच आना और श्रीमती मिलिंद केलोवकर द्वारा रचित 65 कविताओं के संग्रह वाली पुस्तक ''**माझा कविता (माई पोएम्स फॉर माई चिल्ड्रेन)**'' का विमोचन करना मेरे लिए बहुत खुशी की बात है। इनकी मैं प्रशंसक रही हूं और इनके साथ मेरे अविस्मरणीय अनुभव रहे हैं। इनकी कविताओं में हमारे रोजमर्रा के जीवन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकृति के प्रभाव का सूक्ष्म अपितु सजीव ब्यौरा दिखाई देता है। सुप्रिया जी ने तीस वर्ष की अवधि में इन कविताओं की रचना की है और इस प्रकार ये कविताएं उनके जीवन के कार्यों और अनुभवों का आइना हैं।

2. अपनी रचनात्मक प्रतिभा तथा अपने प्राकृतिक और सामाजिक परिवेश के प्रति संवेदनशीलता एवं अपने शब्दों और रचनाओं के माध्यम से लोगों के हृदय और भावनाओं को छू लेने की अपनी योग्यता के कारण लेखक और कवि अत्यंत विशिष्ट प्रकृति के व्यक्ति होते हैं। मैं व्यक्तिगत रूप से उनका बहुत सम्मान करती हूं।

3. वे मानवीय संवेदनाओं को, अपने शब्दों के कुशल संयोजन से प्रकृति एवं परिवेश में के विविध भावों को बहुत ही सरलता से अभिव्यक्त कर देते हैं। मैं

मानती हूं कि इसमें उनके व्यक्तित्वं कृतित्व की छाप भी स्पष्ट होती है। वे अपने अपने कार्य के प्रति मन–प्राण से समर्पित रहते हैं। उनके बारे में यह भी कहा जाता है कि **''जहां न जाए रवि वहां जाए कवि''।**

3. एक महिला, जो अपने परिवार का मूल स्तंभ होती है एवं उनसे अपने परिवार और संबंधियों की भी देखभाल करने की आशा की जाती है, उनके लिए कविता लिखने के लिए समय निकालना थोड़ा कठिन होता है। बावजूद इसके सुप्रिया जी ने समय निकाला एवं अपने मनोभावों को लेखनी से कागज में लिपिबद्ध किया। वास्तव में यह प्रशंसनीय कार्य है। प्रकृति तथा मानवीय भावनाओं और संबंधों के साथ उसके परस्पर प्रभाव के बारे में उनकी समझ वास्तव में सराहनीय है। उनकी कविताओं में वर्षा, झरना, सूखा, लहरों आदि प्रकृति के विविध स्वरूपों को हर्ष, विषाद, प्रेम, अनुकंपा, पीड़ा आदि जैसी मानवीय संवेदनाओं के साथ जोड़ा गया है। इन संवेदनाओं की मार्मिक अभिव्यक्ति उनकी गहरी समझ और सादगी भरे शब्दों से बहुत ही सहजता से हो जाती है, वह उल्लेखनीय है।

4. हम आज उनके उन स्मरणीय पलों और भावनाओं को एक पुस्तक का रूप देने के लिए, बधाई देने के लिए यहां एकत्र हुए हैं। अपने विचारों, संवेदनशीलता एवं भावना को शब्दों के रूप में व्यक्त करने के उनके कठिन परिश्रम की हमें सराहना करनी चाहिए।

5. मैं श्रीमती केलोवकर को तब से जानती हूं जब मैंने महिलाओं के सामाजिक–आर्थिक कल्याण और उनके सशक्तिकरण हेतु कार्य कर रहे एक संगठन ''राष्ट्रीय महिला कोष'' के माध्यम से उन्हें महिलाओं और बालिकाओं के हितों से संबंधित उनके कार्य को देखा था। 100 करोड़ रुपये की मौजूदा धनराशि के साथ कोष, निर्धन महिलाओं को अपनी आजीविका कमाने और आय संबंधी गतिविधियों के लिए कई प्रकार से सहायता प्रदान करने के लिए रियायती शर्तों पर छोटे ऋण प्रदान कर रहा है ताकि उनका सामाजिक–आर्थिक विकास हो सके। इस योजना से वास्तव में महिला स्व–सहायता समूहों और तथा व्यक्तिगत रूप से महिलाओं को अपने सपनों को साकार करने और जीवन को बदलने में सहायता मिली है ।

6. मित्रो, आज मुझे ऋग्वेद का एक श्लोक याद आ रहा है–

''समानी व आकूतः समाना हृदयानि वः

समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति ।।

''अज्येष्ठा सो अकनिष्ठास येते

सं भ्रातरो वावृऽधः सौभगाय ।। ''

(अर्थात्, आपके संकल्पों, हृदय और विचारों में एकता हो; आप सभी में आपसी सहयोग के साथ रहने का और किसी को भी श्रेष्ठ और गौण न मानने की दृढ़ इच्छाशक्ति हो; सभी में भ्रातृत्व की भावना हो; सभी सबके हितों के लिए प्रयास करें और सामूहिक रूप से प्रगति करें।)

7. इसी भावना से, महिलाएं भी जन्मजात स्वतंत्र होती हैं और उनके पास शालीनता एवं सम्मान के साथ जीने का पूर्ण अधिकार है। हमें महिलाओं को पूर्ण स्वतंत्रता और उन्हें अपने सपने साकार करने के अवसर प्रदान करने चाहिए। वस्तुतः, वे सदैव हमारी विकास संबंधी गतिविधियों में बराबर की हिस्सेदार सिद्ध हुई हैं। आज, शायद ही कोई ऐसा क्षेत्र होगा जिस पर नारी–शक्ति ने अपनी अमिट छाप न छोड़ी हो।

8. यह हमारा सौभाग्य है कि हमारे देश में ऐसा संविधान है जिसकी प्रस्तावना, मौलिक अधिकारों और कर्तव्यों में विहित इसके उद्देश्यों के संदर्भ में स्त्री–पुरुष समानता के सिद्धान्त की बात की गई है। हमारा संविधान ऐसी सामाजिक व्यवस्था बनाने की बात करता है जो न केवल समानता सुनिश्चित करे बल्कि ऐसा गुणवत्तापूर्ण जीवन भी सुनिश्चित करे जिसमें लैंगिक आधार पर किसी भी तरह का भेदभाव न हो। इस प्रकार, हमारी शासन व्यवस्था में ही राज्य को महिलाओं सहित समाज के कतिपय वर्गों के लिए विशेष कानून और प्रावधान बनाने का दायित्व सौंपा गया है।

9. विश्व के सबसे बड़े लोकतत्र की लोक सभा की अध्यक्ष के रूप में मैं अत्यंत महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां निभा रही हूँ। मैं जहां भी जाती हूँ, लोग, विशेषकर महिलायें मेरी ओर आशा भरी नजरों से देखती हैं। कुछ लोग मेरे व्यवहार की प्रशंसा करते हैं और कुछ मेरे द्वारा लोक सभा अध्यक्ष के रूप में निभाई जा रही जिम्मेदारियों की कठिन प्रकृति को देखकर आश्चर्य करते

हैं। मैं आपको बताना चाहती हूँ कि किसी विधानमण्डल का सदस्य होना बड़े सम्मान और सौभाग्य की बात है जोकि जन आकांक्षा का ही मूर्त रूप है। हमें निर्वाचित कर लोग हममें अपने विश्वास और आस्था को व्यक्त करते हैं। वे हमसे परिवर्तन और उस विकास के दूतों के रूप में कार्य करने की आशा करते हैं जोकि समावेशी हो तथा जो आम पुरुषों और महिलाओं के जीवन में परिवर्तन ला सकता है।

10. चूंकि हम संसदीय लोकतंत्र और समावेशी विकास के लिए प्रतिबद्ध हैं, इसलिए हमारे सांसदों और विधायकों का यह अनिवार्य कर्त्तव्य है कि वे एक स्त्री–पुरुष समानता वाली सामाजिक व्यवस्था स्थापित करने के मार्ग की बाधाओं को हटाने के साथ–साथ महिलाओं के प्रति संवेदनशील दृष्टिकोण की दिशा में सक्रिय रूप से कार्य करें।

11. इस संदर्भ में, मैं एक बात पर बल देना चाहती हूँ कि हम संसद के स्तर पर महिला आधारित सरोकारों के संबंध में बेहतर नीतिगत विकल्प तैयार करने और प्रशासन को मजबूत बनाने का निश्चित रूप से कोई अवसर नहीं गंवाते हैं। किसी देश की संस्कृति, इतिहास और सभ्यता को कवियों, कलाकारों, लेखकों, चित्रकारों और मूर्तिकारों द्वारा समृद्ध बनाया जाता है। वे लोगों को शिक्षित करते हैं और अपने नेताओं को प्रभावित करते हैं। यहाँ मैं हमारे महान कवि और नोबेल पुरस्कार से सम्मानित डॉ. रबीन्द्रनाथ टैगोर के शब्दों को उद्धृत कर अपनी बात समाप्त करती हूँ :

''स्त्री राष्ट्र के भाग्य की निर्माता और उसे बदलने वाली होती है। यद्यपि वह कुमुदनी के फूल की तरह नाजुक और कोमल होती है, परंतु उसका हृदय एक पुरुष की अपेक्षा कहीं अधिक मजबूत और साहसी होता है ..... ''

इन्हीं शब्दों के साथ, मुझे इस पुस्तक ''माझा कविता (माई पोएम्स फॉर माई चिल्ड्रेन)'' का विमोचन करते हुए अत्यधिक हर्ष हो रहा है। मैं इन कविताओं की रचना करने के लिए श्रीमती सुप्रिया मिलिंद केलोवकर की सराहना करती हूँ और उनके सभी भावी प्रयासों की सफलता की कामना करती हूँ।

धन्यवाद।

————